गुरु नानक – सबद ६५
धनु जोबनु अरु फुलड़ा नाठीअड़े दिन चारि ॥
रागु सिरिरागु, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, २३

धनु जोबनु अरु फुलड़ा नाठीअड़े दिन चारि ॥
पबणि केरे पत जिउ ढलि ढुलि जुमणहार ॥१॥
रंगु माणि लै पिआरिआ जा जोबनु नउ हुला ॥
दिन थोड़ड़े थके भइआ पुराणा चोला ॥१॥ रहाउ ॥
सजण मेरे रंगुले जाइ सुते जीराणि ॥
हं भी वंञा डुमणी रोवा झीणी बाणि ॥२॥
की न सुणेही गोरीए आपण कंनी सोइ ॥
लगी आवहि साहुरै नित न पेईआ होइ ॥३॥
नानक सुती पेईऐ जाणु विरती संनि ॥
गुणा गवाई गंठड़ी अवगण चली बंनि ॥४॥२४॥

सार: अपनी वास्तविक क्षमता को उजागर करने के लिए आत्म-साक्षात्कार आवश्यक है क्योंकि यह आपको अपने आंतरिक उद्देश्य को समझने और प्रामाणिक जीवन जीने में मदद करता है। हमारी दुनयावी मौजूदगी अस्थायी है इसलिए अपनी दुनयावी पहचान पर ध्यान केंद्रित करने से हम आंतरिक विकास, विवेक और आध्यात्मिक प्राप्ति से दूर हो सकते हैं। ज्ञान उम्र तक सीमित नहीं है, यह तब विकसित होता है जब हम खुले दिमाग से सोचते हैं, निरंतर सीखने की कोशिश करते हैं और जीवन के प्रति उत्साह और जिज्ञासा बनाए रखते हैं।

धनु जोबनु अरु फुलड़ा नाठीअड़े दिन चारि ॥
धन, यौवन और खिलते हुए फूल ऐसे मेहमान हैं जो कुछ दिनों के बाद चले जाते हैं।

पबणि केरे पत जिउ ढलि ढुलि जुमणहार ॥१॥
जल-कमल के पत्ते भी मुरझा जाते हैं और नष्ट हो जाते हैं। यह जीवन की नश्वरता को दर्शाता है। (१)

रंगु माणि लै पिआरिआ जा जोबनु नउ हुला ॥
हे प्रिय मित्र, आत्म-साक्षात्कार के आनंद का अनुभव करें और नए दृष्टिकोणों के लिए उत्साह बनाए रखें।

दिन थोड़ड़े थके भइआ पुराणा चोला ॥१॥ रहाउ ॥
जीवन छोटा है और शरीर एक पुराने घिसे-पिटे कपड़े की तरह जर्जर हो जाता है जो पर्याप्त नहीं रह जाता। (१)(विराम)

सजण मेरे रंगुले जाइ सुते जीराणि ॥
वह साथी जो कभी जीवन से भरे थे वह चले गए हैं और अपनी क़ब्रों में आराम कर रहे हैं। यह दुनयावी अस्तित्व की अस्थायी प्रकृति को दर्शाता है।

हं भी वंञा डुमणी रोवा झीणी बाणि ॥२॥
हम भी चले जाएँगे, जो इस सच्चाई पर संदेह करते हैं वह दुःख का अनुभव करते हैं और अस्तित्व की अस्थिरता पर विलाप करते हैं। (२)

की न सुणेही गोरीए आपण कंनी सोइ ॥
क्या आपकी चेतना ने अपने कानों से नहीं सुना है? यह हमें विचार करने के लिए प्रेरित करता है कि क्या हम सचेत रूप से जीवन के आंतरिक और बाहरी परिवर्तनों को अनुभव कर रहे हैं।

लगी आवहि साहुरै नित न पेईआ होइ ॥३॥
नवविवाहिता को अपने ससुराल जाना ही होता है; माता-पिता के घर में रहना स्थायी नहीं हो सकता। यह उदाहरण दर्शाता है कि भौतिक संसार अस्थायी है और प्रत्येक प्राणी को अंततः इस भौतिक संसार से विदा होना ही है। (३)

नानक सुती पेईऐ जाणु विरती संनि ॥
नानक कहते हैं कि अपने माता-पिता के घर में दिन के उजाले में लापरवाही से सोना, यह जानते हुए भी कि यह लूटा जा रहा है। यह कल्पना एक ऐसे मन को दर्शाती है जो सांसारिक भ्रमों में फंसा हुआ है, जबकि वह जानता है कि यह आंतरिक परिवर्तन में बाधा डाल रहा है ।

गुणा गवाई गंठड़ी अवगण चली बंनि ॥४॥२४॥
इस अवस्था में, हम अपने सद्गुणों को खो देते हैं और बुराइयों का भारी बोझ इकट्ठा कर लेते हैं। (४)(२४)

तत्त्व: गुरु नानक सच्ची जागरूकता के सार पर एक प्रभावशाली संदेश देते हैं जो व्यक्तियों को सीमित और पूर्वनिर्धारित मानसिकता से उबरने और खुलेपन तथा विवेकशीलता की भावना अपनाने के लिए प्रेरित करता है। वह चेतावनी देते हैं कि सांसारिक सुखों जैसे दुनयावी संपत्ति और क्षणिक आनंद के प्रति लगाव हमारी आध्यात्मिक भलाई को खतरे में डाल सकता है। ऐसा करने से हम अपने अंतर्निहित गुणों से जुड़ाव खोने और अपनी चेतना पर भारी बोझ डालने का जोखिम उठाते हैं।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**
Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com
ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com